RAJYA SABHA

Friday, the 26th November, 1965/ the 5th Agrahayana, 1887 (Saka)

The House met at eleven of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

*468. [*The questioner (Shri A. D. Mani) was absent. For answer,* vide *col.* 2869 infra.]

भाषाविदों की समिति का प्रतिवेदन

*469. **श्री भगवत नारायण भार्गव :** क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) अन्य प्रादेशिक भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों की देवनागरी लिपि में प्रकट करने के वास्ते चिह्न नियत करने के लिये भाषाविदों की जो समिति 1960 में सरकार द्वारा नियुक्त की गई थी उसका प्रतिवेदन सरकार को कब दिया गया; और

(ख) उसकी मुख्य सिफारिशें क्या हैं और उन पर क्या कार्यवाही की गई है ?

†[REPORT OF THE LINGUISTS' COMMITTEE

*469. SHRI B. N. BHARGAVA: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) when the report of the Committee of Linguists' which was appointed by Government in 1960 for fixation of suitable symbols in Devanagri script for expression of special sounds peculiar to other regional languages was submitted to Government; and

(b) what are its main recommendations and what action has been taken thereon?]

शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भक्त दर्शन) : (क) समिति ने जून, 1965 में एक अस्थायी रिपोर्ट पेश की है ।

(ख) समिति द्वारा की गई अस्थायी सिफारिशों से सम्बन्धित विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है [देखिए परिशिष्ट LIV, अनुपत्र संख्या 32] । समिति की रिपोर्ट, विभिन्न भाषाविदों, विश्वविद्यालयों और विद्या-निकायों को उनकी टिप्पणी के लिए भेजदी गई है । इन संस्थाओं से प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों को ध्यान में रखते हुए, समिति अपनी सिफ़ारिशों को अन्तिम रूप देगी और तब सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश करेगी ।

†[THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION (SHRI BHAKT DARSHAN): (a) The Committee submitted a tentative report in June, 1965.

(b) A statement giving the tentative recommendations of the Committee is placed on the Table of the Sabha [*See* Appendix LIV, Annexure No. 32]. Copies of the report of the Committee have been sent to various linguists, universities and academic bodies for comments. The Committee shall finalise its recommendations in the light of the comments and suggestions received from these bodies and then submit its report to Government.]

श्री भगवत नारायण भार्गव : यह जो विवरण सभापटल पर रखा गया है उसके भाग (क) और (ख) से यह स्पष्ट होता है कि जो भाषाएं खंड (ग) में दी गई हैं वे देवनागरी लिपि में बहुत सरलता से लिखी जा सकती हैं और भाग (ख) में यह बताया गया है कि देवनागरी के लिये कमेटी ने जो कुछ नये संकेत या सुझाव दिये हैं

†[ ] English translation.

उनको यदि मान लिया जाय तो भाग (ख) की भाषाएं भी देवनागरी लिपि में सरलता से लिखी जा सकती है क्योंकि उनकी जो ध्वनि है वह एक हो जायगी। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार इस नीति को निर्धारित करेगी कि सभी भाषाओं का प्रयोग देवनागरी लिपि के द्वारा होने लगे ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, माननीय सदस्य ने दो प्रश्न एक साथ सम्मिलित कर दिये हैं। जहां तक देवनागरी लिपि में भारतीय भाषाओं के लिखने का सम्बन्ध है, उसके सम्बन्ध में भारत सरकार सचेष्ट रही है, प्रयत्न करती रही है और राज्य सरकारों ने सिद्धांततः इस बात को माना है। लेकिन मैं स्वीकार करता हूं कि इस पर ज्यादा अमल नहीं किया जा सका है। जहां तक देवनागरी लिपि में खंड (क) और (ख) के अन्दर जो भाषाएं आती हैं उनका ध्वनियों को सम्मिलित करने का सवाल है, यह एक बड़ा टेकनिकल विषय है और मैं अपने को इसका अधिकारी नहीं मानता और इसीलिये विशेषज्ञों की समिति बिठाई गई थी और उन्होंने जो अस्थायी रिपोर्ट दी है वह राय जानने के लिए भेजी गई है और मुझे उम्मीद है कि कुछ दिनों में उस पर कोई फैसला हो जायेगा।

श्री भगवत नारायण भार्गव : विशेषज्ञों आदि की राय जानने के लिए कब गवर्नमेंट ने लिखा है ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, जून, 1965 में जैसा कि मैंने बताया रिपोर्ट मिली थी और मेरे खयाल में उसके एक-दो महीनों के अन्दर वह रिपोर्ट राय जानने के लिए भेजी गई।

श्री राम सहाय : क्या मैं यह जान सकूंगा कि विशेषज्ञों की राय के मुताबिक कार्य करने में आप के मंत्रालय को क्या कोई दिक्कतें महसूस हुईं ?

श्री भक्त दर्शन : मैं समझा नहीं किस प्रकार की दिक्कतें ?

श्री राम सहाय : भार्गव साहब ने अभी आपसे प्रश्न किया था कि अगर देवनागरी लिपि में कुछ संकेत और बढ़ा दिये जायें तो उससे जो दूसरी भाषाएं हैं उनको लिखने में क्या सहूलियत होगी और आपने बताया कि उस पर राय मांगी गई है, लेकिन मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या आपके मंत्रालय ने इस पर विचार किया और अगर किया तो वह किस निश्चय पर पहुंचा ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, मंत्रालय तो आखिरी फैसला तब करेगा जब राज्य सरकारों और विशेषज्ञों की रायें आ जायेंगी।

SHRI DEOKINANDAN NARAYAN: May I know what steps have been taken to obtain their opinion on this Committee's Report? Have you reminded them to send their comments as soon as possible?

SHRI BHAKT DARSHAN: Sir, the Report was sent to them about two months ago and, as far as I know, no replies have been received so far. We will be reminding them soon.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान् यह बतलायेंगे कि इस कमेटी का पूरा प्रतिवेदन कब तक आने की अपेक्षा है और समिति को जो टर्म्स आफ रेफ्रेंस दिये गये थे उनमें से किन किन पर प्रतिवेदन उन्होंने अंतरिम रूप से दिया है ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, इसमें कोई टर्म्स आफ रेफ्रेंस की जरूरत नहीं थी। एक ही विषय दिया गया था कि देवनागरी लिपि में किस प्रकार ऐसी ध्वनियां सम्मिलित

की जाये जिन से भारत की जो अन्य भाषाएं हैं वे पूरी तरह से उसमें व्यक्त की जा सकें। इसके सम्बन्ध में जून में उनकी अस्थायी रिपोर्ट आई थी और उसके बाद उस पर राय मांगी गई है। मैं यह स्वीकार करता हूं कि इस बारे में कुछ देरी हुई है, लेकिन मैं यह आशा करता हूं कि अब इसमें जल्दी की जायगी।

SHRI D. THENGARI: One Mr. P. B. Kale from Nagpur had conducted certain research in this respect and he had also come before the Committee for giving evidence. Has the Committee conveyed any reaction to his research on this subject?

SHRI BHAKT DARSHAN: Sir, as far as I know, Mr. Kale's opinion was placed before the Experts Committee and it has been taken into consideration.

श्री एन० सत्यनारायण : क्या मैं यह जान सकता हूं कि सरकार की यह नीति निर्धारित हो गई है कि आखिर में देवनागरी लिपि को एक अखिल भारतीय रूप बनाया जाय और उसमें जो अड़चनें हैं उनको दूर करने के वास्ते ही यह कमेटी बनाई गई है ?

श्री भक्त दर्शन : जी हां, उद्देश्य तो यही है।

SHRI R. S. KHANDEKAR: Is the Government aware of the fact that Acharya Vinoba is using Lokanagari lipi in his Bhoodan writtings? How does it differ from the Devanagari lipi and whether the Government will consider the Lokanagari lipi along with Devanagari so that it will be possible for all the Indian languages to have one script?

SHRI BHAKT DARSHAN: Sir, I am not in a position to describe the various differences between the script that is being used by Acharya Bhave and the script that is being evolved but Acharya Bhave's ideas have also been considered by this expert committee.

SHRI J. S. PILLAI: May I know the names of the members of this Committee, Sir?

SHRI BHAKT DARSHAN: Yes, Sir. There are 15 members. They are:—

(1) Director, Central Hindi Directorate (Chairman).

(2) Dr. Chandra Shekhar, Professor of Linguistics, Delhi University, Delhi.

(3) Dr. B. N. Krishnamurti, Government College, Waltair.

(4) Prof. N. Nagappa, Mysore University, Mysore.

(5) Dr. Sukumar Sen, Professor, Calcutta University, Calcutta.

(6) Dr. P. B. Pandit, University of Gujarat, Ahmedabad.

(7) Shri S. K. Toshakhani, C/o Prem House, 1st Bridge, Srinagar (Kashmir).

(8) Dr. Babu Ram Saxena, Vice-Chairman, Standing Commission on Scientific and Technical Terminology, Daryaganj, Delhi.

(9) Shri G. B. Dhall, Puri College, Puri.

(10) Dr. Lok Nath Bharali, Education Officer, Gauhati (Assam).

(11) Dr. Masood Husain, Reader, Department of Urdu, Aligarh University, Aligarh.

(12) Prof. Jogendar Singh Sodhi, Khalsa College, New Delhi.

(13) Prof. N. N. Bhateja, Jai Hind College, Churchgate, Bombay.

(14) Shri V. B. Kolte, Principal, Nagpur Mahavidyalaya, Nagpur.

(15) Deputy Director, Central Hindi Directorate, Delhi (Convener).

So, practically all the languages were represented.

MR. CHAIRMAN: Next question.

INSTITUTE OF THE PEOPLES OF ASIA, Moscow

*470. SHRI ARJUN ARORA: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) the number of post-graduate students from India who have been selected to join the Institute of the Peoples of Asia at Moscow; and

(b) the courses for which these students have been selected?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION (SHRI BHAKT DARSHAN): (a) Out of 50 Candidates selected under the U.S.S.R. Government Scholarships Scheme 1965-66, one has been admitted in this Institute by the Soviet authorities.

(b) Research in History.

SHRI ARJUN ARORA: Sir, may I know what are the special facilities given to Indian research students in this Institute at Moscow?

SHRI BHAKT DARSHAN: Sir, I have not got any details about this particular Institute, but generally speaking the Soviet authorities provide all facilities about boarding, lodging, tutoring and even warm clothes are supplied to the students.

SHRI ARJUN ARORA: May I know if all the seats made available to this country were utilised or was it that only some of them were utilised because the Government found it difficult to select candidates?

SHRI BHAKT DARSHAN: Sir, an offer of 50 scholars per year was made by the Soviet authorities and the Ministry has been recommending names up to that limit, but the final decision rests with the Soviet authorities themselves. I may point out for the information of the hon. Member that during 1961-62 forty four were selected but 32 finally joined, during 1962-63 forty six were selected but 32 finally joined, during 1963-64 thirty six were selected but 23 actualy joined, during 1964-65 forty were selected but 24 joined and during this year, that is, the current year, 50 names were sent but, as far as my information goes, only 34 have been accepted.

SHRI ARJUN ARORA: Sir, from the figures given by the hon. Minister it appears that the regular feature of the working of this scheme has been that 50 students have never availed of this opportunity. May I know if the Government has examined the reasons which have led to this deficiency and has it taken any steps to ensure that all the 50 seats made available and for which students in the country are keen are really made use of?

SHRI M. C. CHAGLA: May I point out that very often the difficulty is this? Students are selected and the fact of that selection is communicated to them and then very often at the last moment they change their mind. Then it is too late to find new students because we have got to get the sanction of the Soviet authorities. But I agree that we should try and avail ourselves of the scholarships and we are doing our best. But there are difficulties. The list is prepared in consultation with the Soviet authorities, students are informed—they have appeared before the Selection Board